Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

दीन बन्धु सर छोटूराम

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 16 vad 06 30 tqykbZ 2016 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

प्रशासनिक विफलता बनाम जाट आरक्षण

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

लोकतंत्र में हर व्यक्ति व समाज को अपना हक मांगने का मौलिक अधिकार है लेकिन अगर किसी को संघर्ष व आंदोलन से भी उनका वाजिब हक ना मिले और यहां तक कि मिला हुआ अधिकार भी छिन जाए तो उसके आत्म सम्मान व भावनाओं को ठेस पहुंचना स्वाभाविक है। जाट वर्ग के साथ आरंभ से ही आरक्षण के मुद्दे पर इस प्रकार का व्यवहार हो रहा है।

राष्ट्रीय सर्वेक्षण संगठन के आंकड़ों के अनुसार अन्य पिछड़ी जातियों की जनसंख्या पूरे देश में 36 प्रतिशत आंकी गई है और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य आंकड़ों के मुताबिक ओ बी सी की संख्या पुरे राष्ट्र में 30 प्रतिशत है। इन्ही आंकड़ों को आधार मानकर आज ओ बी सी के 27 प्रतिशत आरक्षण कोटे में सभी शिक्षा संस्थानों व सरकारी सेवाओं में करीब 75 जातियों को ओबीसी कोटे में शामिल किया गया है। इसलिए जाट आरक्षण पंजाब व हरियाणा जैसे जाट बाहुल्य क्षेत्रों में और भी वैध व जायज बन जाता है। पूरे राष्ट्र में 8.25 करोड़ व हरियाणा में 29 प्रतिशत जाट वर्ग से हैं जिनका मुख्य धंधा खेती बाड़ी है, जो कि आज घाटे का धंधा बन गया है।

स्वतंत्रता के पश्चात पिछड़े वर्गों, अनुसचित जन जातियों तथा अन्य गरीब वर्गों के उत्थान व कल्याण के लिए आरक्षण की सुविधा प्रदान करने के लिए भारतीय संविधान में प्रावधान किए गए हैं। यह प्रावधान 1993 के ओ बी सी अधिनियम में भी किया गया है जिसकी प्रत्येक 10 वर्ष बाद समीक्षा करके, अन्य पात्र वर्गों को आरक्षण की सुचि में शामिल किया जाना था लेकिन राजनैतिक स्वार्थों से आज तक ओ बी सी जातियों की पुनः समीक्षा नहीं हो पाई जिस कारण जाट वर्ग जैसे पात्र वर्गों को आरक्षण का लाभ नहीं मिल पाया।

आरक्षण के प्रावधान के लिए भारत सरकार ने 29 जनवरी 1953 को संविधान की धारा 340 के तहत काका केलकर की अध्यक्षता में एक कमीशन गठित किया जिसने 20 मार्च 1995 को अपनी रिपोर्ट सरकार को पेश की लेकिन कमीशन अपनी रिपोर्ट में पिछड़े वर्गों की पहचान करने के लिए आर्थिक व सामाजिक विषयों के अध्ययन में उलझा रहा जिस कारण यह रिपोर्ट संसद में पेश न की जा सकी और जाट वर्ग की पिछड़ा वर्ग की आरक्षण की मांग पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। इसके बाद भारत सरकार ने 1 जनवरी 1979 को बी पी मंडल की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया जिसने 31 दिसंबर 1980 को अपनी रिपोर्ट सरकार के समक्ष पेश की। लंबे समय के बाद मंडल कमीशन की रिपोर्ट को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री बी पी सिंह की सरकार द्वारा 13 अगस्त 1990 को लागू किया गया। मंडल कमीशन ने पिछड़ी जातियों की पहचान के लिए धारा 15(4) के तहत केवल दो शर्तों-आर्थिक पिछड़ापन तथा शैक्षणिक पिछड़ेपन को आधार माना जबकि सामाजिक पिछड़ेपन के आधार को नकार दिया। इसलिए केवल दो ही शर्तों के आधार पर अहिर, गुर्जर, सैनी, लोहार, कुम्हार, सुनार, खाती व कंबोज आदि जातियों को पिछड़ा मानकर 27 प्रतिशत आरक्षण का लाभ प्रदान कर दिया और तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. वी पी सिंह की उप प्रधानमंत्री व किसान नेता जन नायक चौ० देवीलाल के साथ अनबन होने के कारण रंजिशवश जाट वर्ग जैसी अन्य जातियां जो सामाजिक, शैक्षणिक पिछड़ेपन के साथ-साथ आर्थिक तौर पर काफी कमजोर है, को आरक्षण सं वंचित रखा, जिस कारण से समाज के अन्य वर्गों में मंडल आयोग की रिपोर्ट पर काफी हंगामा हुआ और रोषस्वरूप असंख्य युवाओं ने आत्म हत्याएं तक कर डाली।

संविधान की धारा-15 डी व 16(4) के तहत राज्य सरकार द्वारा सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पिछड़े नागरिकों विशेषकर जिनका सरकारी सेवाओं व शिक्षण संस्थाओं में बहुत कम प्रतिनिधित्व है, के लिए ओ बी सी कोटे के अंतर्गत आरक्षण का प्रावधान किया जा सकता है। इस संदर्भ में जन नायक स्व० चौधरी देवीलाल के नेतृत्व वाली सरकार ने स्व० चौ० हुकम सिंह के मुख्य मंत्री काल में हरियाणा प्रदेश में 7 सितंबर 1990 को हरियाणा बैकवर्ड क्लास कमीशन (जस्टिस गुरनाम सिंह आयोग) की स्थापना की। इस आयोग ने सामाजिक, शैक्षणिक व आर्थिक आधार पर पिछड़े वर्गों का सर्वेक्षण करके व सभी कानूनी पहलूओं पर विचार करके हरियाणा सरकार को 31 दिसंबर 1990 को अपनी रिपोर्ट पेश की जिसके अनुसार अहीर, बिश्नोई, मेव, गुर्जर, जाट, जट-सिक्ख, रोड़, त्यागी, सैनी व राजपूत जातियों को ओ बी सी कोटे के तहत आरक्षण सूचि में शामिल करने की सिफ्ज़रिश की।

कमीशन की रिपोर्ट को राज्यमंत्री परिषद से अनुमोदित करवाकर दिनांक 2अप्रैल 1991 को अधिसूचना क्रमांक 395-एस.डबल्यु(1)-91 द्वारा यथावत अधिकसूचना जारी की गई,

'k"k i`t&2 ij

शेष पेज–1

राष्ट्र में निरंतर बढ़ रही बेरोजगारी युवा वर्ग में भविष्य के प्रति असुरक्षा व निराशा की भावना उत्पन्न कर रही है जिस कारण राष्ट्र की युवा शक्ति विकास की अपेक्षा अवन्नति की ओर अग्रसर है जिसका राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ राष्ट्र के विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। राष्ट्र के ग्रामीण समाज विशेषकर न1सलवाद से प्रभावित बिहार, महाराष्ट्र, छतीसगढ़ आदि रा%यों में बढ़ती हुई बेरोजगारी के साथ–साथ आर्थिक विकास का अभाव व भुखमरी भी माओवाद का मु य कारण है। आज भी इन क्षेत्रों में ७०० प्रतिशत जवान अनपढ़ व बेरोजगार हैं और इनकी दयनीय आर्थिक स्थिति व अशिक्षा का लाभ उठाकर माओवादी अपने गिरोह बढ़ा रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार आज अधिकतर रा%यों में माओवादी संगठनों ने लगभग ४० हजार स्थायी सदस्य व एक लाख अतिरिक्त सदस्य बना रखे हैं और इन्होने बाकायदा अपने क्षेत्र घोषित किए हुए हैं जहां माओवादी खुद फैसला सुनाने, कर इकट्ठा करने व सुरक्षा प्रदान करने का कार्य करते हैं। अब बेरोजगार युवकों के इलावा महिलाएं भी आंतकवादी सगंठनों में संलिप्त हो रही हैं। आंतरिक सुरक्षा के अन्य पहलू दयनीय हो रही आर्थिक अव्यवस्था व आर्थिक असमानता में भी सुधार किया जाना बहुत जरूरी है।

देश में बढ़ता हुआ व्यापक भ्रष्टाचार भी राष्ट्रीय सुरक्षा, अमन व स्वतंत्रता के लिए खतरे का अंदेशा है। इस बुराई से आम नागरिकों विशेषकर शिक्षित बेरोजगार युवकों के मनोबल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जो कि किसी भी राष्ट्र के विकास एवं प्रगति के लिए हितकर नहीं है। आज सुरक्षा सेनाओं व सुरक्षा संगठनों की भर्ती, भर्ती का संगठनात्मक ढांचा, सुरक्षा की आधुनिक तकनीक व अन्य तकनीकी साधनों सहित सभी में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है जिस कारण युवाओं के लिए बहादुरी व कर्तव्यपरायणता के प्रदर्शन का क्षेत्र – भारतीय सैन्य व सुरक्षा बलों में आज युवा वर्ग का लगाव काफी कम हो गया है। देश की सुरक्षा में लगे सात केंद्रीय सुरक्षा बलों में तकरीबन एक लाख सैनिकों तथा सैन्य सेवाओं की करीब १२ हजार अफसरों की कमी है। सेना व अर्धसैनिक बलों के प्रति युवाओं का घटता रूझान भी आंतरिक सुरक्षा के लिए बेहद चिंता का विषय है।

राष्ट्र को न्याय उपलब्ध करवाने वाली न्यायिक व्यवस्था भी भ्रष्टाचार व राजनैतिक दबाव के कारण प्रभावित हो रही है जिस कारण अपराधियों व घोर आंतकियों के मामलों का लंबे समय तक निपटारा ना होने से अपराधियों के हौंसले बढ़ जाते हैं और न्याय व्यवस्था से जनता का विश्वास कम होता है। शासक दलों में भी रसुकदार व्यक्ति व नेता अपने प्रभाव से अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही को प्रभावित करते हैं। जनता को न्याय व सुरक्षा दिलाने में हमारी न्याय प्रणाली जटिल व धीमी है जिसका प्रभावशाली व्यक्ति अपनी सुविधा अनुसार फायदा उठाते हैं।

राष्ट्र के खुफिया तंत्रों के अनुसार न1सलियों के लश्करे–तोएबा तथा अन्य इस्लामी आतंकवादी संगठनों से संबंध बढ़ते जा रहे हैं और चीन का पूर्ण संरक्षण प्राप्त है तथा पशुपति से तिरूपति तक रैड–कारीडोर स्थापित करने की चीन की मंशा है। पाकिस्तान की आई एस आई इन्हे पूरा सहयोग दे रही है। यही नहीं न1सलवादी हर हमले के बाद मजबूत और घातक बनते जा रहे हैं और सुरक्षा बल कमजोर होते जा रहे हैं। गत ५ वर्षों में सुरक्षा बलों सहित ३८३६ निर्दोष व्यक्ति न1सली हिंसा का शिकार हो चुके हैं। न1सवादियों से पिछले चार वर्षो में ऐ के ४७, बंब और आर डी ए1स सहित तीन हजार से भी अधिक हथियार बरामद किए गए हैं। अकेले ज मु कश्मीर में वर्ष २०००00 से लेकर २००६ तक विभिन्न बंब विस्फोटों तथा आतंकी हमलों में २२६ नागरिक व सुरक्षा कर्मी मारे गए और १५० से भी अधिक गंभीर रूप से ज मी हुए। इससे पता चलता है कि हमारा खुफिया तंत्र नाकाम हो चुका है और केंद्र स रा%यों के बीच तालमेल की कमी है। इस समस्या के प्रति हमारे शासक वर्ग में भी मतभेद है। सरकार की कभी गर्म व कभी नर्म नीति के कारण केंद्र और रा%यों में सुरक्षा बलों का मनोबल गिर रहा है। वास्तव में २१वीं शताब्दी उग्रवाद व आतंकवाद से पूर्णतया पीड़ित रही है।

वर्ष २००८ में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री एम.के. नारायन की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र में लगभग ८०० आतंकी यूनिट अपनी कार्यवाही में लगे हैं। अकेले वर्ष २०१२ में भारत में २३१ निर्दोष नागरिक आतंकी कार्यवाही में मारे गये जबकि समूचे विश्व में इसकी सं या ११०९८ है। जुलाई २०१६ को भारत सरकार द्वारा जारी किये गये आंकड़ों के अनुसार वर्ष २००५ के बाद आतंकी हिंसक घटनाओं में ७०७ व्यक्ति मारे ये जबकि ३२०० से अधिक ज मी हुए।

गलोबल टैरोरिसम इंडै1स–२०१५ के तीसरे एडीसन की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष २०१४ में विश्व के आतंकवाद से सबसे अधिक प्रभावित १६२ देशों में भारत छठे स्थान पर आस्ति है और आज भी भारत का नाम आतंकवाद से प्रभावित राष्ट्रों में १०वें स्थान पर आता है। जोकि गंभीर समस्या है।

राष्ट्र में ज मू–कश्मीर के बाद यूपी इस्लामिक आतंकवाद का मु य स्रोत बनकर उभर रहा है। राष्ट्र में कहीं भी बम ब्लास्ट होता है, छानबीन के पश्चात उसका उदगम स्थान यूपी में ही निकलता है। वर्ष २००० से हुये राष्ट्र में ५४ मु य आतंकी हमलों में से कम से कम ४५ का सीधा संपर्क यूपी से था जिनमें १४ बम ब्लास्ट थे। प्रदेश में असं य अशिक्षित व बेरोजगार नवयुवकों की भागीदारी से आतंकवाद का व्यवसाय तीव्र गति में बढ़ रहा है।

आतंकवाद के बढ़े गढ़ ज मू–कश्मीर में भी गत वर्ष से लेकर ४७ सुरक्षा सैनिकों व १०८ आतंकवादियों सहित १९० से अधिक व्यक्ति आतंकी हमलों में मारे गये। प्रदेश की मु यमंत्री एवं गृह मंत्री महबूबा मु ती ने स्वयं माना है कि १५ जनवरी २०१५ से १५ जनवरी २०१६ तक एक वर्ष के अंदर आतंकवाद से संबंधित १४६ वारदात हुई जिसमें १०८ आतंकवादी ३९ सुरक्षा सैनिक व २२ नागरिकों सहित १६९ व्यक्ति मारे गये। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के लगते कुपवाड़ा, बारामुला व बांदीपोरा जिलों में दक्षिणी कश्मीर की अपेक्षा आतंकी घटनाओं में दोगुने व्यक्ति मारे गये हैं और इन आतंकी हमलों में पाकिस्तान की हर गतिविधि जगजाहिर होने पर भी प्रदेश सरकार कार्यवाही नहीं करती है। यही कारण है कि खतरनाक आतंकी बुरहानवानी के मुठभेड़ में मारे जाने पर प्रदेश में पूर्णतय अव्यवस्थित व बेकाबू हुए माहौल की क र्यू द्वारा भी नियंत्रित नहीं किया जा सका जिसमें १५ सुरक्षा सैनिक व निर्दोष नागरिक मारे गए। जोकि सरकार की दोगली नीति को दर्शाता है। केंद्रीय सरकार सुरक्षा के मुद्दे पर गंभीर नहीं है। हाल ही में इंडियन एयरफोर्स का विमान लापता हुआ है, जिसमें २९ यात्रियों का कोई सुराग नहीं मिला है। इसी माह श्रीनगर में सीआरपीएफ बस पर आतंकी

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है, दुनिया उस पर कल अमल करती है। –विनोबा भावे

हमले में लगभग ३५ सुरक्षा सैनिक हताहत हुए।

आज राष्ट्र की बाहरी सीमाओं को सबसे अधिक खतरा चीन की तरफ से लगातार हो रही सीमा संबंधी हरकतों व अवैध घुसपैठ से है। चीन तथा पाकिस्तान मिलकर आजाद कश्मीर तथा अफगानिस्तान के अंदर भारत के विरूद्ध लगातार आतंकी माहौल बना रहे हैं जिससे जेएंडके के अंदर आतंकवाद लगातार बढ़ रहा है। समय-समय पर चीन द्वारा बाहरी सीमाओं का उल्लंघन करके लेह, अरूणाचल प्रदेश तक अवैध कब्जा कर लिया गया है और चीन द्वारा पाकिस्तान को सीमा पार से भारतीय सेनाओं पर फायरिंग करने तथा देश के आंतरिक हिस्सों में विध्वंसक कार्यवाही करने के लिए आधुनिक परमाणु हथियारों की पूर्ति करवाई जाती है। आजाद कश्मीर में भी चीन की गतिविधियां लगातार बढ़ रही हैं और चीन अब भारत के अटूट हिस्से अरूणाचल प्रदेश पर भी स्थाई हक जताने लगा है। पाकिस्तान और बंगला देश से भी भारतीय सीमा में अवैध घुसपैठ जारी है 1योंकि सीमा पार के दोनों मुल्कों की भाषा, मजहब, खान-पान, पोषाक, परंस्पर मिलती जुलती है, जिसको स्थानीय से अलग पहचान करना कठिन है। वर्ष २००१ की जनगणना के एक अनुमान के अनुसार केवल बंगलादेश से ही ३० लाख व्यक्ति गैर कानूनी ढ़ंग से देश में प्रवेश कर चुके हैं जिसमें से २० लाख से अधिक देश के महानगरों में पूर्णतया स्थाई तौर से निर्वाह कर रहे हैं और काफी लोगों का राशन कार्ड व वोटर कार्ड आदि की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। इस प्रकार के गैर कानूनी आगतुंकों की %यादा सं या अंतर्राष्ट्रीय सीमा से लगते आसाम, अरूणाचलप्रदेश, त्रिपुरा, पश्चिमी बंगाल, मिजोरम, उतर प्रदेश, बिहार आदि रा%यों में अधिक है।

राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा, अखंडता व आन बान को बनाए रखने के लिए संघर्षरत सुरक्षा बलों व सैन्य कर्मियों के कल्याण व विकास हेतू राष्ट्रीय नीति बनाई जानी चाहिए। इसके साथ ही राष्ट्र की सुरक्षा, अखंडता के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों व उनके आश्रितों के स मान व कल्याण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर स मानजनक नीति निर्धारित की जानी चाहिए ताकि राष्ट्रीय व सीमा पार की सुरक्षा में लगे हुए सुरक्षा बलों एवं अलगाववादियों व आतंकवादियों से विषम परिस्थितियों में मुकाबला कर रहे सुरक्षा सैनिकों में आत्मविश्वास, स्व%छंदतता, आत्मनिर्भरता व आत्म स मान की भावना कायम रखी जा सके 1योंकि शहीदों के स मान से ही सुरक्षा बलों का स मान बढ़ता है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सीमाओं पर तैनात सुरक्षा बलों व राष्ट्र के अंदर की हिंसक घटनाओं का मुकाबला कर रहे सुरक्षा कर्मियों की कारगुजारी पर राजनैतिक हस्तक्षेप व फिजूल की टिप्पणी बंद की जानी चाहिए। यह सर्वविदित है कि जिस कौम एवं समाज में बुजर्गों का स मान नहीं होता वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता और जिस राष्ट्र में सैनिकों का स मान न हो वह राष्ट्र कभी सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिए आज राष्ट्र को अवसरवादी, भ्रष्ट व अव्यवस्थित तंत्र के मायाजाल से बचाने के लिए देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

वैवाहिक विज्ञापन

- SM for Jat Girl (DOB 08.11.90) 25.2/5'3" Staff Nurse in Govt. Hospital Sector 6, Pkl Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Contract: 09463881657
- SM for Jat Girl (DOB March,1988) 28.4/5'3" BCA, MCA, B.Ed. Passed HARTRON Programme Exam. Avoid Gotras: Kadian, Lohchab, Bijarnia. Contract: 09417070518
- SM for Jat Girl (DOB 14.12.89) 26.7/5'5" M.Sc. B.Ed. Employed in U.T. Avoid Gotras: Dhayal, Panghal, Bamel. Contract: 09416078126
- SM for Jat Girl (DOB 13.09.1987) 28.10/5'5" M. Tech. College Lecturer Rohtak. Avoid Gotras: Nandal, Pawaria, Ahlawat. Contract: 09996060345
- SM for Jat Girl (DOB 05.09.1991) 24.10/5'6" M.Tech. (CSE) Employed in a University. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Contract: 09796844991.
- SM for Jat Girl (DOB 07th Feb.1990) 25/5'10" B.Tech. (ECE), M.Tech. (ECE) from M.D.U. Rohtak. GATE Qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathi, Sangwan. Contract: 08447796371
- SM for Jat Girl 25/5'2" B.Tech (CSE) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon. Contract: 09780336094
- SM for Jat Girl (DOB 08.11.90) 25.2/5'3" Staff Nurse in Govt. Hospital Sector 6, Pkl. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Contract: 09463881657
- SM for Widow Issue less Jat Girl (DOB 02.10.80) 35.5/5'3" MS.c, M.Phil., B.Ed. Employed as Junior Lecturer in Haryana Government. Avoid Gotras: Nandal, Sehrawat, Dalal. Contract: 08570032764
- SM for Jat Girl (DOB 04.06.91) 25.1/5'4" Ph.D, NET Qualified. Employed as Lecturer in Delhi Government College. Avoid Gotras: Khatri, Punia, Chhikara. Contract: 09818300227
- SM for Jat Girl 27.5/5'7" B.A. (Hons.), M.A. English, M.Phil., B.Ed, NET Qualified Employed as J.B.T. Teacher in U.T. Chandigarh. Avoid Gotras: Malhan, Kadian, Chahar Contract: 09467394303
- SM for Jat Girl (DOB 26.11.89) 26.8/5'3" B.Tech. M.Tech. P.O. in I.D.B.I. Bank. Avoid Gotras: Pannu, Gill, Dhull. Contract: 09416865888
- SM for Jat Boy (DOB 21.04.90) 25.6/5'9" B. Tech. Assistant in Excise & Taxation Deptt. Avoid Gotras: Mor, Siwach, Singroha Contract: 09988701460.
- SM for Jat Boy 27/5'8" B.A. LLB. Practising in District Court Pkl. Avoid Gotra: Balyan, Nehra. Contract: 09996844340
- SM for Jat Boy 26.9/5'7" M.C.A. Employed as Project Engineer in ORACLE Co. at Banglore. Avoid Gotras: Grewal, Antil, Dalal. Contract: 09417629666.

आचरण-रहित विचार कितने ही अच्छे क्यो न हों, उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए। -महात्मां गांधी

On Reservation in Education and Employment for Rural Youths

D.S. Hooda

INTRODUCTION

Education and employment for rural youths is a great concern to all those who are worried about the future of the country. It is true that waves of globalization and liberalization that slammed the Indian shore in 1991, have since then taken only 27 percent of more than one billion population in its grip, leaving behind 73 percent grist to the mill. The researchers have delved for ways to minimize the urban-rural gap and to provide proper education and job opportunities to rural youth and that is the biggest challenge before the Central and State governments.

Sensex had attained new heights to cause excitement in Mumbai and in corporate India; speeches from big houses brought cheers to Indians living far away from Dalal Street or the glitter of Banglore and Hyderabad. Our foreign exchange reserve had also increased magnificently. Our growth rate (GDP) had also risen considerably. But all these success stories did not dispel the general gloom prevailing in rural India as benefits of globalization and liberalization of economy did not reach the villages; rather the economic condition of the villagers had deteriorated.

A recently conducted study presents a concurrent scenario of migration from villages to cities and towns that is going on in India. Due to unequal development and the indifferent attitude of development agencies of the government, a considerable proportion of rural population has immigrated to urban places in search of jobs and that has caused many problems in cities and towns. Migration from rural to urban has changed the nature and proportions of population and its supportive system. Days are not far when urban population may surpass the rural population.

Despite global recession India had made spectacular progress in various fields, but rural India still faced poverty, unemployment, ignorance and socio-economic inequality. New economic forces are bringing with them new opportunities for development and for nation-building. The country is said to be moving on the path of progress, but the gap between urban and rural areas with regard to infrastructure for education, health, employment opportunities, etc., has been widening day by day. According to 2008 data only 11.3% of individuals in India rural areas attend college or university as compared to 30% in urban areas. It is a fact that the country will not achieve the status of the developed country until rural India is developed.

National Social Survey Organization (NSSO) has reported that during last 10 years poverty alleviation has been only 0.74%. Similarly UNESCO report says that in 2004 about 14 millions children remained deprived of education and 38% were left out at primary stage. The International Labor Organization report that unemployment has increased 15% at global level out of this 10% is in South Asia and India is on the top. According to Muhammad Yunus, Nobel Laureate, **"lasting peace can't be achieved till disparities between have and have-nots are removed"**. His micro-credit scheme has brought social transformation and has been proving a boon to the rural economy in Bangladesh.

REASONS OF THE PREVAILING SITUATION

No doubt India has made commendable progress in Space, Information Technology and Industrial Development and consequently, millions of jobs have been generated by big industrial houses, corporate, software and service companies, etc., but these jobs remained out of reach for rural youths. The main reason is that the poor quality of education is being imparted in village schools. There is shortage of teachers and posts of teachers remain unfilled for many years and that have detrimental effect. Even teachers in positions come late and do not work. Some of them miss the classes on one pretext or other. No efforts are made by these teachers to motivate the students who have become indifferent to studies and indulge in antisocial and nefarious activities. Examination Results of these schools are alarming: Most of students either fail or pass with poor marks. There can be many reasons for this dismal situation; however, some of these are identified as given below:

u The villagers also do not care about the education of their wards. They depend and run after the politicians for the jobs of their children. Actually, they are bewildered as they find the politicians of all parties are from the same flock.

u Educated and affluent persons in villages are migrating to cities from villages and their wards also seek admission to good schools in cities. The students who study in village schools are either from the poor or uneducated families.

u In fact reservation policy for scheduled castes, scheduled tribes, back ward and other backward classes has failed to improve the conditions of villagers of these categories and the whole benefit has been cornered by affluent persons of their own categories living in cities and towns.

u If the purpose of education is to bring harmony in society, there should be equally distribution of infra-structure, resources and process of education between cities and villages, but the villages are deprived of these facilities.

u The extreme disparities in the infra structure and quality of education among urban and rural schools.

Over many years the people of rural India have shown a tendency to live with misery and sufferings with immense patience. Their tolerance threshold has been fairly high all along. But their worry about all that their children do not get proper education and employment is ominous. As the population has increased and landholdings in villages have been squeezing, so unemployment problem in rural areas has taken ugly shape. Consequently, rural unemployed youths are adopting unlawful activities for their livelihood and they have become a threat to law and order problem. This has caused social problem as rural youth do not find any means of livelihood and even girls for marriage.

Ironically, the politicians make false promises at the time of elections and forget afterwards. Problem has attained such a dimension that if it is not readdressed immediately, the villagers may lose faith in the present system of governance, even in democracy. Majority of the people in rural areas do not have even proper food and clothing. Such issues should be addressed effectively to achieve social justice and equality. Even media never highlight the prevailing conditions of the poor villagers. Although some political parties do talk about rural development and employment, yet sincere efforts have not been undertaken to mitigate their sufferings. Actually, it requires a lot of courage and political will power a political party in power.

IMPETUS MODEL

When the economic prosperity of a nation does not translate visibly into improvement of the terms of reducing infant mortality and malnutrition as well as providing better prospects for health, housing, education, employment and skill development, it can't be a genuine development. It is ironical that our country registers significant rates of economic growth, but leaves a bulk of population in villages poor, undernourished and educationally backwards. There can be many other problems like famine and hunger, poverty, population control, health, etc., but education and employment are the most acute problems being faced by rural youths.

Villages in our country are lagging behind in education, indicating inequality in access to education at all levels, particularly in technical, vocational and higher education. Prof. Amarteya Sen has repeatedly decried the neglect of quality education to rural people in India. Even facilities for basic education are not provided in most of neglected and remote rural areas despite its widely recognized importance for a nation's economic prosperity and living standard of its citizens. Because of this they are migrating to cities and towns for the sake of education of their wards and that has caused problem not only of scarcity of water and electricity in cities and towns but law and order also.

Education is also a catalyst for social change, and this has been emphasized by social reformers like Dr. B.R.Ambedkar, Ram Mohan Roy, Swami Vivekanand, Lala Lajpat Rai, Swami Dayanand, Sir Chhotu Ram, Jayprakash Narayana, etc. They are of the view that educated people can better understand their deprived status and chalk their own cause of action. Populations that cannot read and write are more vulnerable to exploitation economically and politically.

Best practices and high rates of literary achievements in Kerala and Himachal Pradesh show that inevitability of child labour is much less than other states. So there should be a concrete action by both Government and Public to redress the present situation.

Some leaders do talk about the present plight of the farmers to gain political mileage, but do not think about others who are living in villages and their economic condition is worse than farmers. In fact they are not well intentioned and are lacking in vision, so they are unable to suggest to remedial measures in this regard.

It has been mentioned earlier also that Dalits and backwards living in villages could not derive any benefit of reservation. So it is imperative to bridge rural and urban divide by providing equitable opportunity in education and jobs. For that we are to identify easily accessible social, economical and educational parameters for linking backwardness with reservation for rural youths of reserved and non reserved categories in admissions to professional and technical institutes at the first instance.

The disparities in the quality of education are against the principles of equality and social justice. So the students from rural areas should be given a preferential treatment in terms of reservations in providing opportunities for higher education and employment. After a lot of thinking and spade work the following model is proposed for adoption and implementation by the central and state governments:

"It is proposed to have 50% reservation vertically in every category of reservation and non reservation in admission to various academic programs, professional courses and employment for students who have passed two out of three examinations namely middle, high and +2 from village schools and have studied for at least eight years in a village school. This reservation is proposed to implement initially for ten years at the beginning"

If the said policy is adopted and implemented in right earnest, it will facilitate entry in jobs for rural youths, migration from villages will stop and even those students who have migrated to cities may shift back to villages to avail the benefit of reservation. This will generate a new environment of competition among students of rural schools and that is an essential gradient for development of education at every stage.

The model suggested above will prove a revolutionary in stopping skill drain from villages to cities and towns. The proposed policy of reservation if implemented will infuse new spirit and enthusiasm among rural youths who presently feel neglected and depressed. Middle class and educated families who have migrated to cities and town will also send their wards to the schools of their village to derive the benefit of reservation. It will increase enrolment, improve quality of education and reduce the dropout rates.

Existence of a high school within a radius of 2-3 km of every village, recruitment of qualified teachers, provision of teaching aids, mid-day meals, uniforms, books and notebooks are essential prerequisites to make the proposed reservation policy a success. There should a paradigm shift in the curriculum design, teaching techniques and assessment process so that the students are prepared intellectually to pursue the technical, professional and college education. All new technical and management institutes, colleges and universities should be opened in backward rural areas.

There will be an important source of social mobility, which will have an impact on the development process. Local residents will also begin to take interest in studies of their children. Consequently, rural youth will have opportunities to seek admission to good institutes and to get jobs in private and public sectors. It is a misconceived view that reservations affect merit. Actually, merit is a matter of perception and it is unjust to equate people's merit in isolation from broader socio-economic realities wherein more than 70 per cent of population remains deprived of quality education and employment of opportunities.

Implementation of the proposed model will pave the way to a more egalitarian order. It will cause integration and social cohesion among villagers of all castes and sub castes. Thus it will help to end the centuries' old scourge and the caste syndrome. It will create a social reform movement or some kind of renaissance to get rid of the present caste ridden social structure as benefits of reservation is proposed on the basis of have and have-nots. Recently, Apex Court has upheld 93rd constitutional amendment act enabling the government to make a law providing reservation for those who are educationally and economically backward as a class from all castes living in villages.

CONCLUSION

The above mentioned reservation policy will be in conformity with article 16(4) of the constitution which reads: "Nothing in this article shall prevent the state from making any provision for the reservation of admissions and appointments or posts in the opinion of the state, is not adequately represented in higher education and services under the state" This provision in the constitution empowers the state and centre to provide reservation to those who are deprived of adequate educational facilities and representation in Government and Private jobs as a class of rural people. Thus, the proposed policy is legally valid if it is enacted by state legislature or parliament in case of central universities and institutions.. For that it is essential to create awareness among rural masses about the proposed reservation policy and it can be possible if some social organizations and political parties come forward to unite and mobilize them to raise their voice vociferously to get the proposal implemented.

चौ0 छोटूराम की विचारधारा की जरूरत

- सूरजभान दहिया

जहां तक मुझे समझ आता है भारत वर्ष का लोकतंत्र राज, मठ और सेठ का गठजोड़ है। इस तंत्र में लोक तो है ही नहीं। सिर्फ वोट डालने से जन लोकतंत्र का भोगी नहीं बनता। सत्ता पर काबिज अभिजात वर्ग वास्तव में जन साधारण से दूरी बनाये रखना अपना राजनीतिक धर्म समझता है भले ही वह सभी सुविधाएं जन साधारण पर लदे टैक्सों के सहारे ही ले रहा है। जब उत्तरी भारत में पोपलीला के विरूद्ध आर्य समाज विचारधारा जन आंदोलन का रूप ले रही थी तो उस समय का एक किस्सा मुझे एक बुजुर्ग ने बताया। आर्य समाज के विरूद्ध एक पंडित आग उगलता रहता था। तथा जाट समुदाय सबसे ज्यादा आर्य समाज से प्रभावित था। उस पंडित की सबसे घृणित कौम जाट थी। वह पंडित बुहारी की सीक को गंगाजल में डूबोकर रोटी के टुकड़े खाता था क्योंकि वह रोटी जाट के घर से आती थी। उसके एक सहयोगी ने पंडित को कह दिया– यह आप क्या ठोंग कर रहे हो? आखिरकार अन्नदाता तो जाट ही है और आपको रोटी भी वही दे रहा है। पंडित ने फिर कहा– जाट को उसके हर नेक काम के लिए श्रेय देने के बजाए निरूत्साहित करते रहो नहीं तो वह फिर सामाजिक व राजनीतिक महाशक्ति बन जाएगा। भारत आजाद हुआ क्या आजादी के बाद भारतीय राजनीतिक दलों ने जाटों को पंडित की कूटनीति के तहत हाशिये पर रखा। यह आज के संदर्भ में एक गहरा विचार का मुद्दा है? तो सबसे जाट कौम के संदर्भ में लोकतंत्र राज का हम विश्लेषण करते हैं। मुजफर नगर जाट कालेज के एक समारोह के अवसर पर जिले के भले हिंदुस्तानी कलक्टर ने कहा था– जाटों के लिए एक अच्छा काश्तकार होना अच्छा है। इसका मुंह तोड़ उत्तर दिया था। उस समय के सभापति चौधरी छोटूराम ने। तुरंत कलक्टर साहब को फटकारते हुए उन्होंने कहा– राज्य की नौकरी गुलामी नहीं, राज्य में हिस्सा लेना या हाथ बांटना है। जो लोग नौकरी नहीं करेंगे वे राज्य में हिस्सा न पा सकेंगे नौकरी यदि बुरी चीज है तो कलक्टर साहब को तुरंत यह छोड़ देनी चाहिए। हुकूमत करना जाटों का दैवी अधिकार है। जब उनके इस अधिकार पर आंच आये तो उन्हें उसकी रक्षा के लिए सब कुछ करने को तैयार होना होगा। कलक्टर साहब इस पर हाथ मलने लगे और खेद प्रकट करते हुए चौधरी साहब से उन्हें क्षमा मांगी।

एक ओर विवरण इसी संदर्भ में यहां उस समय उद्योगमंत्री थे और पंजाब असेंबली में इस एम.एल.ए. लाला दुलीचंद ने चौधरी साहब को बहस में कटाक्ष करते हुए टोक दिया। जाट और उद्योग–धंधे? जाटों का उद्योग धंधों से क्या संबंध हो सकता है? चौधरी साहब यह विश्वास दिलवायें कि उद्योग–धंधों का कौन प्रबंध करेगा? तब हम इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं करेंगे। चौधरी साहब ने इन तीखे प्रहारों का बड़ी शांति से उत्तर दिया। लाला दुनीचंद का कहना है कि पंजाब में उद्योग धंधों की तरक्की इसलिए नहीं होगी कि यह महकमा एक जाट मिनिस्टर के पास है। मैं अपने विपक्षी मित्र को यह बता देना चाहता हूं कि जाट में स्वाभवतः शासक के गुण मौजूद रहते हैं। वह मानव समाज को समझाने में समर्थ हैं, अपने महकमे के अधिकारियों से काम लेने का सामर्थ्य रखता है। इसकी कार्यशक्ति आप लोगों से कई गुनी है। इसलिए जब आप इस महकमे के मंत्री थे, उससे कहीं, अच्छा काम मेरे अंतर्गत अब हो रहा है।

चौधरी छोटूराम ने 7 जुलाई 1938 को पंजाब कृषि उत्पादन मंडी बिल सदन में पेश किया। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए डा. गोकुल चंद नारंग ने कहा– यह मार्केटिंग बिल नहीं, यह तो इसका विरोध है। किंतु फिर भी पंजाब की जाटशाही ने कर्जा निर्वारक कानून बनाकर हमारे लेन–देनों को समाप्त कर दिया है। बेनामी कानून बनाकर हमसे जमीनें छीन ली हैं। यह हमारे सर्वनाश पर तुली है। आगे राय बहादुर लाला मुकंद लाल पुरी ने कहा– दुर्भाग्यवश चौ. छोटूराम के प्रभाव में सारे कानून ऐसे बन गये हैं जो हमारा सर्वनाश करने वाले हैं।

भारत के लिखित इतिहास में सिर्फ उपरोक्त एक उल्लेख मिलता है, जहां सरकारी दस्तावेज में चौधरी छोटूराम के काल को विरोधियों ने भी जाट गवर्नमेंट प्रभावित किया है।

आज जबकि आम आदमी खासकर किसान उनके विचारों को अमलीजामा पहनाने के लिए तरसते हैं पर चौधरी छोटूराम के नाम पर वोट बटोरने वाले राज नेताओं को इस बात की कोई चिंता नहीं है। सिर्फ चौ. छोटूराम ताउम्र कुचलों के देवता व शोषकों के दुश्मन बनें रहे। छोटे कद के, नाम से छोटे पर बड़े नेता चौ. छोटूराम उन बेजुबानों की जुबान थे जो सेठ साहूकारों की चक्की में लगातार पिस रहे थे। वे अपने जीवन में संघर्ष करके किसान वर्ग के उत्थान की ऐसी महानगाथा लिख गये जो रामायण की भांति पवित्र है और अमिट हैं पर आज जो किसानों पर मार पड़ रही है उसे निजात कैसे मिले? नेतागण तो स्वार्थ में लिप्त हैं और अप्रभावी भी। ऐसे में सिर्फ जरूरत यही है कि हर आम आदमी, हर किसान छोटूराम बनकर इस लोकतांत्रिक, राजशाही से टकराये। अपने अधिकारों के प्रति वह जागरूक हो तथा चौ. छोटूराम के जीवन से सबक लेकर अपना भला व बुरा पहचाने। देहाती बनकर नई दिल्ली में बैठे सत्ता भोगियों से अपना हक मांगने का किसान साहस करें और इससे काम न चले तो इसे छीन लेने की हिम्मत भी रखे।

मानना होगा चौ. छोटूराम जन्मे ही सिर्फ नेता होने के लिए और किसानों को नरक से निकालने के लिए थे। रोहतक में वे 1912 में हुक्का रखकर वकालत करने बैठ गए–दबे कुचलों के लिए जो मुकदमे लड़े उनमें से कुछेक के विरूद्ध गलत फैसले आये, उनके कारण वे आवेश में आ गये। न्याय नहीं अंधेर है, काले कानून हैं, मुझे बदलने होंगे। यह कोर्टों में दो जल्लाद बैठे हैं– एक गोरे जज जो गलत फैसले देते हैं, दूसरे काले सूदखोर जो फैसले खरीदते हैं। 31 साल की वह युवा दिव्य शक्ति थी, कुछ प्रगतिवादी शख्सियत चरित्र था, चट्टानों से टकराने की फिदरत थी। उसने कानून बदलने का संकल्प लिया, साथ–साथ सरकार पर काबिज होने का भी फैसला किया।

वे विद्वान थे, विचारक थे तथा वे जिस क्रांति की ओर अग्रसित हो रहे थे, उसके लिए माहौल बनाने की जरूरत थी, इसलिए उन्होंने एकदम उठाया कि वे अपने किसान भाईयों के शोषण के विरूद्ध तैयार करेंगे। उन्होंने किसानों को शोषण से लड़ने के लिए जाट गजट साप्ताहिक पत्रिका लांच की। उसे गांव–गांव में पहुंचाया जिसे लोग हुक्के पर बैठकर सुनते थे। धीरे–धीरे लोगों में एक नई सोच पनपी– अपने हक की लड़ाई तो लड़नी ही होगी और चौ. छोटूराम की अगुवाई में हमें एकजुट खड़ा होना होगा। उनकी बेचारा जमींदार पुस्तक ने तो गीता की भांति प्रेरणा दी। किसान एक क्रांतिकारी युग में जाने के लिए तैयार हो गया। चौ. छोटूराम ने पंजाब की राजनैतिक गतिविधियां किसान के इर्द–गिर्द घूमने लगी। 1923 में चौ. छोटूराम ने यूनियनिस्ट पार्टी का गठन करके पंजाब की सत्ता अपने हाथ में ले ली। जिस पर वे परलोक सिधारने से पूर्व 9 जनवरी 1945 तक काबिज रहे।

यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार ने चौ. छोटूराम की रहनुमाई में सिर्फ पांच साल में कोई 35–40 नये कानून बनाकर पंजाब में किसान सरकार की संरचना की। सूदखोरों ने उन्हें खूब कोसा, प्रभात फेरियां निकालकर उन्हें दिशा भ्रमित करने की साजिश रची। विधानसभा में पंजाब सरकार के बजट को जमीदाराना बजट करार दिया और चौ. छोटूराम ने विधान परिषद हाल में ही बेहिचक स्वीकार किया– यश ईट ईज। इससे चौ. छोटूराम की दूरदर्शिता के कारण पंजाब में रक्तहीन किसान क्रांति का श्रीगणेश हुआ जिससे परिणामस्वरूप विश्व में दूसरे युद्ध के दौरान चौ. छोटूराम की किसान शक्ति का अहसास हुआ।

विश्व युद्ध लड़ने के लिए इंग्लैंड के पास भारत का पंजाब एक ऐसा प्रांत था जो सैन्यशक्ति, खाद्य शक्ति और समर्थय प्रदान करने का एकाधिकार रखता था। इस एकाधिकार की कुंजी चौ. छोटूराम के पास थी। जब वायसराय वेवल द्वारा गेहूं खरीद पर बुलाई गई बैठक में चौ. छोटूराम ने वायसराय की बात न मानकर वाकआउट किया तो लार्ड वेवल काफी परेशान हुए। उन्होंने पंजाब के गवर्नर को फोन किया कि वे चौ. छोटूराम मंत्रिमंडल से बर्खास्त करें। इस विषय पर गवर्नर ने वायसराय को सलाह दी– यदि इंग्लैड को विश्व युद्ध जीतना है तो चौ. छोटूराम को सहन करना ही पड़ेगा।

इसके पश्चात लार्ड वेवल ने चर्चिल को चेताया कि चौ. छोटूराम की अपार शक्ति किसानों से है। चेताया कि चौ. छोटूराम के नेतृत्व में किसान शक्ति किसी भी विश्व शक्ति को हराने में सक्षम है। अतएव इंग्लैंड को एक योजना बनानी होगी जिससे पंजाब किसान शक्ति क्षीण हो जाये और इस प्रकार भारत के विभाजन और पंजाब किसान शक्ति को विच्छेद करने की योजना को लागू करने के दिशा–निर्देश इंग्लैंड सरकार ने दिये। जिन्नाह को इसके लिए पंजाब में प्रभावी होने के लिए राजी किया गया परंतु छोटूराम के सर्वेसर्वाह विभाजन योजना एक स्वप्न ही रहेगी। यह भारत के लिए एक महान ट्रैजेड़ी बन गई जब चौ. छोटूराम का 9 जनवरी, 1945 को देहांत हो गया और इंग्लैंड का भारत का विभाजन करने का रास्ता मिल गया।

1947 में आजादी के साथ पंजाब के दो टुकड़े हुए– किसान शक्ति विभाजित को गई और स्वतंत्र भारत में किसान समुदाय को अपना कोई प्रभावी नेतृत्व नहीं मिला। विभाजन के बाद दोनों देशों के दिलों में गहरे जख्म पैदा कर दिये। शायद विभाजन करने वालों ने उतनी बुरी स्थितियों की कल्पना ही नहीं की थी। हत्या, आगजनी और जबरन विस्थापन ने दोनों देशों के मन में अंधेरी गुफाएं पैदा कर दी और आज तक उससे वे बाहर नहीं निकल पाए। तीन पीढ़ियां गुजर जाने के बाद भी हमारे भीतर गहरा अविश्वास है और न जाने कब वह दूर होगा। पर पाकिस्तान में चौ. छोटूराम के प्रति जो आज भी श्रद्धा बनी हुई है वह कभी विस्मृत नहीं हो सकती। हमने चौ. छोटूराम का अध्ययन करना बंद सा कर दिया है पर पाकिस्तान में चौ. छोटूराम को अंतःकरण से पढ़ा जाता है और बहुत ज्यादा उन पर शोध कार्य हो रहा है। वहां पर उन पर टीवी चर्चाएं अक्सर होती रहती हैं।

आर्थिक विकास के नाम पर चौ. छोटूराम के समतावादी समाज निर्माण के राष्ट्रीय लक्षण को हमने भूला दिया है। शायद इसलिए आर्थिक विकास के रूप में देश में संपन्नता के कुछ टापू उभर आये हैं जबकि चारों तरफ विपन्नता का किसान महासागर ही हिलोरे मारता नजर आता है। लोकतंत्र ने आम आदमी को असहाय बना दिया है। जाट की चौधर गौण हो गई और लोकतंत्र में हम जाट हैसियत को निकारे कर पाते हैं। यह एक अति संवेदनशील मुद्दा है। इस पर चौधरी छोटूराम विचारधारा के तहत चिंतन और काम करने की अति जरूरत है नहीं तो लोकतंत्र जाट कौम के लिए अर्थहीन हो जाएगा।

कर्तव्य और वर्तमान हमारा है, फल और भविष्य ईश्वर का है। –होरेस ग्रेले

रहबरेआजम दीनबंधु सर छोटूराम को भारत रत्न क्यों नहीं ?

देश में महान हस्तियां पैदा होते रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। उनमें से एक सर छोटूराम भी थे। 24 नवम्बर 1881 में पैदा हुए। उस समय पंजाब की हालत पूरे देश में सबसे खराब थी क्योंकि पंजाब में महाभारत से लेकर आजादी तक यहां हमेशा लड़ाई होती रही। 1901 से पहले देश में कोई स्कूल नहीं था। पूरे उतरी भारत में छोटूराम जी ने स्कूल–कॉलेजों की बौछार लगा दी और छतीस बिरादरी के नर–नारियों को पढ़ने का अनुग्रह किया। छूआछूत को दूर करके भाईचारे का पैगाम दिया। वुन्दावन में पहली आई.टी.आई और बनारस में विश्व हिन्दु विद्यालय की स्थापना छोटूराम व राजा महेन्द्र प्रताप ने की। अध्यापक मदन मोहन मालवीय से शिलान्यास कराया। धर्मजाति को आधार मानने से राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता। 1911 में रोहतक से कांग्रेस के अध्यक्ष बने और जलियावाले बाग की घटना व असहयोग आन्दोलन जो गांधी जी व नेहरू की देन थी। उससे नाराज होकर कांग्रेस को अलविदा कह दिया। देश के 15 राज्य में से सिर्फ पंजाब में यूनियनिष्ट पार्टी का शासन था। बाकी 14 राज्य में कांग्रेस। हिन्दु–मुस्लिम–सिक्ख गरीब जनता इनको अपनी आंखों का तारा समझते थे। पंजाब के हृदय सम्राट थे। 1918 में राय साहेब व कश्मीर के मुख्यमंत्री पद को ठुकराया। पंजाब में जल विद्युत योजना शुरू की और भाखड़ा डैम प्रोजेक्ट तैयार किया। ऐ मेरे भोले गरीबों दो बात मेरी मान लो बोलना लो सीख और दुश्मन को पहचान लो। इन्होंने पंजाब को एक समर्थ प्रान्त बनाया। आई.एन.ए. चौधरी छोटूराम राजा महेन्द्र प्रताप की देन थी और सुभाष को उसका सेनापति बनाया। फौजी के खाने व वस्त्र, हथियारों का प्रबन्ध किया। अगर आई.एन.ए. नहीं बनती तो देश आजाद नहीं होता। अगर छोटूराम जिन्दा रहते तो देश का बंटवारा नहीं होता और पूरे देश का प्रधानमंत्री जवाहर लाल नहीं सर छोटूराम होता। अंग्रेजों ने तो छोटूराम के सामने ही हाथ खड़े कर दिये थे कि हम जा रहे हैं, हमें मारों मत अपना संभालो। दुर्भाग्वंश 9 जनवरी 1945 को छोटूराम का स्वर्गवास हो गया। फिर जिन्हा गांधी नेहरू जैसे नेता पंजाब में आ घुसे और देश का बंटवारा करवा दिया। बहुत खून खराब हुआ। अंग्रेजों को दो साल रोक लिया गया। 15 अगस्त 1947 में देश आजाद हुआ। उसके बाद तीन साल गर्वनर जरनल अंग्रेज ही रहे। सर छोटूराम गुजर गया ये समझे गरीबों के सिर से छतर ताज उतर गया। उत्तरी भारत नेता अधिकारी, शिक्षक व तरक्की सब छोटूराम की देन है। उन्होंने पंजाब को जीरों से हीरो बनाया और आज प्रत्यक्ष में देश के हर राज्य का नागरिक रोजी–रोटी की तलाश पुराने पंजाब, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिम उत्तरी प्रदेश आ रहें हैं। ये छोटूराम की देन है। उनका एक विचार था। देश के हर धर्म हर जातिवर्ग की तररक्की हो इसके लिए छोटूराम ने भाखड़ा डैम प्रोजेक्ट तैयार करने में अपनी जिदंगी को भी दांव पर लगा दिया। कहने को छोटूराम, ये तो छोटे राम ही थे।

समाज के उत्थान के लिए जो कानून बनाये :–

1. पंजाब बाद मूल्यांकन अधिनियम – 1938
2. पंजाब भूमि हस्तान्तरण (संशोधन) अधिनियम–1938
3. पंजाब गिरवी पंजीकरण अधिनियम – चखर–1938
4. पंजाब रहनशुदा (गिरवी) अधिनियम भूमि बहाली (वापसी) अधिनियम–पाँच–1938
5. पंजाब भूमि हस्तान्तरण (तीसरा संशोधन) अधिनियम–1938
6. पंजाब भूमि हस्तान्तरण (चौथा संशोधन) अधिनियम–1938
7. प्रांतीय दिवालियापन (पांचवा संशोधन) अधिनियम–1939
8. पंजाब ऋणी सुरक्षा (संशोधन) अधिनियम–1939
9. पंजाब कृषि उपज विपणन केन्द्र अधिनियम–पाँच–1939
10. पंजाब मुजारा (संशोधन) अधिनियम–पाँच–1939
11. पंजाब ऋणी सुरक्षा (संशोधन) अधिनियम–1939
12. पंजाब जोत चकबंदी (संशोधन) अधिनियम–नौ–1940
13. पंजाब कर्जा उपज राहत (संशोधन) अधिनियम–बारह–1940
14. पंजाब कृषि उपज विपणन केन्द्र (बिक्री केन्द्र) संशोधन अधिनियम–नौ–1941
15. पंजाब माप, तोल व नाम अधिनियम–1942
16. पंजाब गन्ना (संशोधन) अधिनियम–1942
17. पंजाब कर्जा (संशोधन) अधिनियम–1943

ग्रामोत्थान के कार्य :–

1. गांवो के विकास पर सरकारी कोष में से शहरों की तर्ज पर धन खर्च करना।
2. ग्रामीणों के लिए नये–नये रोजगार पैदा करना।
3. घरेलू उद्योगों एवं कुटीर धंधों को बढ़ावा देना तथा वित्तीय सहायता देना।
4. पशुधन को प्रोत्साहन देकर दुध के उत्पादन को बढ़ावा देना।
5. गांवों को सड़कों द्वारा शहरों से जोड़ना।
6. लड़कियों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना।
7. कृषि का स्तर ऊँचा उठाना।
8. ग्रामीण को सस्ती ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराना।
9. ग्रामीण समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरूद्ध जोरदार प्रचार करके उनकी मानसिकता में परिवर्तन लाना।
10. छूआछूत, अंधविश्वास आदि बुराईयों को मिटाने का प्रयास करना।
11. अछूतों के लिए पीने के पानी के लिए अुएँ बनवाना।
13. ग्रामीणों में यह चेतना पैदा करना कि वे एक ही धन्धे अथवा खेती पर ही आश्रित न रहें।
14. हर जाति धर्म में कोई भेदभाव नहीं। बराबरी की आवाज उठाई।

समझदार व्यक्ति वे नहीं है, जो अवसर की राह देखते है, बल्कि वे व्यक्ति है, जो अवसर को सिर्फ अपने ही अधीन रखते है। –चेंपिन

जाट तख्त की सार्थक पहल

चहल हनमत सिंह,
चंयरमैन जाट तख्त, हरियाणा

आज हमारा जाट समाज कुछ ऐसे लोगों के षड्यंत्र का शिकार हो गया है, जो जाटों की विशेषता और उनकी उन्नति की क्षमता को देखते हुए भयभीत हैं। ऐसे कुछ लोगों ने षड्यंत्र का काम किया है और यह काम कई वर्षों से चल रहा है। आज सबसे जरूरी है कि जाट युवाओं को आगे बढ़ाने के उपाय किए जाएं। जाट कर्म, ईमानदार, युवा देश को आर्थिक और अन्य सभी मोर्चों पर तेजी से आगे ले जाने में सक्षम हो सकें। इन्हीं बातों को लेकर के जाट एकता और अपनी कॉम की पहचान बना सकें। इसलिए जरूरत के अनुसार आज जाट तख्त हरियाणा के नाम से संस्था का गठन किया है। जहां समाज के हितों के लिए तरह–तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। जाट तख्त हरियाणा के माध्यम से उन नव युवकों को सत्ता के उच्च शिखर पर पहुंचाने व जाट नव युवकों को भावी आई.ए.एस. आई.पी.एस. एच.सी.एच चिकित्सा, इंजीनियर, अध्यापक और उच्च अधिकारी बनाने में संस्था संयोजग करेंगी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य यही रहेगा, जाट तख्त हरियाणा निःस्वार्थ भाव से काम करने वाले समाज के हितैषी भाईयों का स्वागत करेगा। इन योजनाओं को धरातल पर उतारने के लिए आपके सहयोग की जरूरत है। जाट समाज को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व संस्कारी रूप से समृद्ध बनाने में आपका योगदान चाहिए, क्योंकि समाज की समृद्धि में ही आपकी और हमारी आने वाली नस्लों की समृद्धि है जाट तख्त हरियाणा को अपना लक्ष्य पाने में, सक्षम बनाने में अपना सम्पूर्ण सहयोग दें। अभाव ग्रस्त जीवन जी रहे मेधावी जाट युवाओं को मजबूत बनाने का संकल्प ले और हरियाणा स्टेट को दुनिया में एक मजबूत बनाने का संकल्प ले और हरियाणा स्टेट को दुनियां में एक मजबूत खुशहाल व भाईचारे की पहचान दें। इस अभियान में आप अपना सम्पूर्ण योगदान दें। जाट तख्त हरियाणा जिला व ब्लॉक स्तर पर अपनी ईकाईयों का गठन करके संगठन को मजबूत बनाया जाएगा व जाट कौम को मजबूती देने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगें।

चौधरी छाजू राम : (1861-1943)

आधुनिक भारत के भामाशाह की जीवन गाथा

– यशपाल कादियान, पत्रकार करनाल

आधुनिक युग में दानवीर सेठ छाजूराम को अपने समय का भामाशाह, कुबेर अवतार और हरियाणा का कोहिनूर का हीरा की उपमा दी गई। इस देश में धनवान तो लाखों लोग हुए जिनके पास अथाह धन–सम्पति तो हुई लेकिन उन्होंने समाज के लोगों के लिए कुछ नहीं किया लेकिन सेठ छाजू राम के पास अपार एवं अकूत धन–सम्पति थी। उन्होंने समाज के प्रचार और गरीबों–असहायों की सहायता के लिए उस समय करोड़ों रुपये दान दिया। वे स्वयं कहा करते थे कि 'जितना ज्यादा धन मैं पवित्र कामों के लिए देता हूँ उसके कारण ईश्वर की असीम कृपा दृष्टि मुझ पर बनी रही और मेरे पास धन दौलत की कमी कमी नहीं रही अपितु उतनी ज्यादा बढ़ती है' 'धन्य हो ऐसे माता–पिता और वह पवित्र भूमि जिन्होंने ऐसे उच्च, चरित्रमान, धार्मिक, गरीबों और असहायों का मसीहा दानवीर पुत्र पैदा किया लेखक उनको बार–बार नमन करता है।'

दानवीर छाजू राम का जन्म सन् 1861 में जिला भिवानी के गांव अलखपुरा में साधारण किसान सालिग राम के यहाँ हुआ। इनके पूर्वज सीकर के निकटवर्ती गोठारा से आकर आबाद हुए। इनका बचपन माता–पिता के साथ अलखपुरा के ग्रामीण वातावरण में बीता। उन्होंने प्रांरम्भिक शिक्षा बवानीखेड़ा गांव के स्कूल में प्राप्त की और छात्रवृति प्राप्त करते रहे, मिडल पास के बाद इनका रेवाड़ी के हाई स्कूल में दाखिला करवा दिया गया। अपनी तेज बुद्धि एवं कड़ी मेहनत के कारण दसवीं पास की। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाये और शिक्षा यहीं पर रूक गई लेकिन उनको हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, संस्कृत का बहुत ज्ञान था। हालांकि वह स्वयं मैट्रिक से आगे नहीं पढ़ पाए लेकिन कलकता जाकर उन्होंने शिक्षा के महत्व को समझा और उन्होंने हिसार, रोहतक, हिसार में अनेक शिक्षण संस्थाएं खुलवाने में आर्थिक योगदान दिया।

हजारी बाग में कलकत्ता को प्रस्थान : भिवानी में रहते हुए इनका सम्पर्क आर्य समाजी इंजीनियर श्री राय साहब शिवनाथ से हो गया। आप इनके बच्चों को पढ़ाने में लग गए। राय साहब आपकी मेहनत व कार्यशैली से बहुत प्रसन्न थे। वो इनको अपने साथ कलकता ले गए। कुछ समय पश्चात इनका सम्पर्क राजगढ़ के सेठ के साथ हो गया फिर धीरे–धीरे कलकता में इनका सम्पर्क मारवाड़ी सेठों से हो गया। आप दैनिक व्यापारिक पत्र अंग्रेजी में लिखने लग गये तथा व्यापारियों के साथ व्यापारिक बातें करने लग गए और व्यापार संबंधित गुण सीखे।

जूट किंग बने : आपने कलकता में पुरानी बोरियों का व्यापार आरंभ कर दिया। दिन रात कठोर मेहनत करते थे जिस कारण कलकता में इनकी बड़े कारोबारियों में गिनती होने लगी। ये कम्पनियों के हिस्से खरीदते रहे और फिर जूट का करोबार पूर्ण रूप से अपने हाथ में ले लिया। कलकता की मार्किट में आप 'जूट किंग' के नाम से जाने

जाते थे। कलकता की 24 कम्पनियों में 75 प्रतिशत शेयर थे। हिसार में 5 सम्पूर्ण गांव आपके थे। अलखपुरा और शेखपुरा में दो शानदार महलनुमा कोठियाँ और पाँच हजार बीघा जमींन थी। कलकता में 6 शानदार कोठियां थी। आपकी गिनती भारतवर्ष के चोटी के व्यापारियों में होती थी। समस्त बिरला घराने से आपके दोस्ताना और व्यापारियों से सम्बन्ध रहे हैं और श्री घनश्याम दास बिरला से तो भाईयों से भी बढ़कर घनिष्ठता व आदर्श मित्रता थी। आपको हरियाणा का बिरला कहा जाने लगा।

गौसेवक : आप धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'गौ करूणा निधि' पुस्तक पढ़ने के पश्चात आप पर विशेष प्रभाव पड़ा। आपने अनेकों गऊशालाएं खुलवाई। कलकता और भिवानी में बहुत बड़ी गऊशालाएं खुलवाई जिसका सारा खर्च स्वयं करते थे।

स्वभाव तथा चरित्र : सेठ छज्जू क्षत्रिय जाति के 'भामाशाह' थे। जो भी किसी भी कार्य के लिए उनके पास दान मांगने चला गया तो उन्होंने आशा से अधिक दान दिया। उन्होंने पुराने समय में मानव जाति के कल्याण व उत्थान के लिए करोड़ों रुपया दान दिया। एक अवसर पर सेठ छाजू राम ने कहा 'मैंने गरीबी की चरम सीमा अपने जीवन में देखी है जबकि लोग मुझे करोड़पति व अरबपति कहते हैं।' 'मैंने एक ऐसी जाति में जन्म लिया जहाँ किसी ने न्यापार किया नहीं, मैं वही कार्य करता हूँ। 'जिस प्रभु ने मुझ पर इतनी कृपा की है उसके नाम पर जितना दान करूं थोड़ा है।' जितने में दान करता हूं उतना ही भगवान मुझे लाभ दे देता है। मेरी इच्छा पैसा कमा कर गरीबों और जरूरतमंदों का उद्धार, धर्म, शिक्षा और समाज कल्याण के कार्य करने की थी। वह भगवान की दया से लगभग पूरी हो गई। इतना धन सम्पति होने के बावजूद वे सभी प्रकार के दुर्व्यसनों से बचे रहे। इसका कारण उन पर आर्य समाज का प्रभाव, महात्मा गांधी व बंगाल में रहने के कारण रविन्द्र नाथ टैगोर पर प्रभाव पड़ा। सेठ छाजूराम का दुःखद निधन 7 अप्रैल 1943 को हुआ लेकिन इनकी सेवाभाव एवं दान देने की प्रवृति आज के धनी वर्ग एवं युवाओं को प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

जाट वीरांगना कुमारी शैलजा

(जिसने सिकंदर के प्रमुख सेनापति फिलिप्स का कत्ल करके अपने हजारों जाट भाईयों की मौत का बदला चुकाया था)

पंजाब के मांझा क्षेत्र में करीब 2300 वर्ष पूर्व पहाड़ सिंह नामक जाट के घर कुमारी शैलजा का जन्म हुआ था। कठ गौत्री जाट भी स्त्री–पुरूष सुंदर व बलिष्ठ होते थे। बलिष्ठ व सुंदर शरीर की महत्ता थी। स्त्री–पुरूषों को स्वेच्छा से विवाह करने की छूट थी। रावी व व्यास नदियों के बीच कठ जाटों का गणतंत्र था। सिकंदर के सैनिकों ने कठवीरों को भाले की नोंक में लटकाया। लेकिन कठवीर झुके नहीं उनके सत्रह हजार वीरों ने बलिदान देकर इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान पाया। इन प्रबल जाटों की वीरता को देखकर सिकंदर का व्यास पार करने का साहस नहीं हुआ। मालवा (पंजाब) के वीरों ने भी तीरंदाजी के कमाल दिखाये। सिकंदर की छाती में भी तीर लगे। जाटों की वीरता से डर कर सिकंदर वापस लौटने लगा तथा रास्ते में ही मर गया। वीरभूमि मांझा में लगभग दो हजार तीन सौ वर्ष पूर्व वीरांगना शैलजा का जन्म हुआ। शैलजा ने बचपन में अस्त्र–शस्त्र चलाने में निपुणता प्राप्त की। शैलजा ने बचपन में राजनीति अत्याचार देखते थे। उसने अपने पूर्वजों पर हुए अत्याचारों का बदला लेने की ठानी। राजनीति में बदला लेने के लिए अनेक विधाओं की जरूरत पड़ती है। कुमारी शैलजा ने नृत्य और संगीत की शिक्षा ली। सिकंदर का सेनापति फिलिप्स प्रजा पर अनेक अत्याचार कर रहा था। कुमारी शैलजा कैकेय देश के राजप्रसादों में (जहां फिलिप्स रहता था) पहुंच गयी। कामी फिलिप्स के सामने वह मुख में नंगी तलवार लेकर नृत्य करने लगी। फिलिप्स उस पर मोहित हो गया। फिलिप्स को नृत्य के साथ–साथ खूब शराब पिलाई। बेहोश होने पर शैलजा ने तलवार से फिलिप्स का सिर धड़ से अलग कर दिया। उस पर गांधार और कैकेय देश की जनता ने राहत की सांस ली। देश स्वतंत्र हो गया।

चंद्रगुप्त के राज्य विस्तार में राजा नंद बाधक था। नंद बड़ा ताकतवर शासक था। राजा नंद को मारना आसान नहीं था। उस कठिन कार्य के लिए शैलजा तैयार हुई। अनुपम सुंदरी शैलजा ने सुगंधित जलों से स्नान किया। उत्कृष्ट वस्त्र धारण किये शैलजा राजा नंद के महल में दाखिल हो गयी। अति रूपसी शैलजा को देखकर नंद काम वासना से वशीभूत हो गया। वह शैलजा के रूप में नृत्य और अभिनय में खो गया। शैलजा के हाथों शराब के प्याले पीता गया। जब नंद ने शैलजा का हाथ पकड़कर खींचा तो सुरा ने भरे स्वर्ण कलश को सुमाल्य नंद के सिर पर दे मारा। राजा सुमाल्य नंद मारा गया। शैलजा राजा को मारने के बाद भी नृत्य करती रही। दो तीन घंटे बाद वह द्वारपालों को यह कहकर बाहर आ गयी कि राजा अभी आराम में हैं, उन्हें मत जगाना। बाहर चंदगुप्त के सैनिकों ने पाटलीपुत्र में युद्ध शुरू कर रखा था। भीतर के सैनिक अपनी जान बचाने में लगे थे। कठ सुंदरी ने नंद के बंदियों को आजाद कर दिया। बंदियों ने चंद्रगुप्त का साथ दिया। इस प्रकार पटना के दुर्ग पर चंद्रगुप्त की पताका फहराने लगी। शैलजा ने कठ प्रदेश का शासन संभाल कर अनेक जन कल्याण कार्य किये। भारतवासी ऐसी वीरांगना से प्रेरणा लेते रहेंगे।

जाट पुत्री - शिवदेवी

(जिसने अपने आंव पर हमला करने वाले 17 पुलिस वालों को मौत के घाट उतारा था)

शिवदेवी बड़ौत के किसान नेता जाट शाहमल की बेटी थी। सन् 1857 की क्रांति की शुरूआत मेरठ में हुई थी।जनपद के किसान नेता शाहमल जाट ने भी जमकर अंग्रेजों से लोहा लिया था। क्रांतिकारियों को अंग्रेजों ने मौत के घाट उतारा। उन लोगों को कोल्हू से पीसकर चूर–चूर कर मसल दिया। स्त्री, बूढ़े और बालकों को भी अन्न–जल के अभाव में तड़पा–तड़पा कर मारा। जाटों के अनेक गांवों को अंग्रेजों ने बागी घोषित कर दिया तथा उनकी जमीन, मकान व चल–अचल संपत्ति जब्त कर ली। वर्ष 1947 तक काले अंग्रेजों ने भी इन गांवों को विशेष यातनायें दी। केवल इतना ही अन्न दिया जाता था कि वे जिन्दा रह सकें। पशुओं के लिये भूसा भी ले जाते थे। अतः किसान पुत्रियों को घास–खोद कर पेट भरना पड़ता था। घी–दूध बेचकर उन्हें अपना गुजारा करना पड़ता था। जाट–पुत्री शिवदेवी ने जब यह अत्याचार देखा तो उन्होंने अंग्रेजों को मारने का निश्चय किया। उसकी सहेली किशनदेवी ने भी इस आजादी यज्ञ में साथ देने का निश्चय किया। बड़ौत के कुछ जाट युवकों के साथ शिवदेवी ने बड़ौत में ही गोरों के तम्बुओं पर हमला कर दिया। शिवदेवी के नेतृत्व में जाटों ने तुरन्त 17 अंग्रेजों को तलबार के घाट उतार दिया। जब कि 25 भागकर छिपने में सफल रहे। घायल शिवदेवी अपने घावों की मरहम पट्टी कर रही थी कि बाहर से आये अंग्रेजों ने उसके घर को घेर लिया। अंग्रेज सैनिक जाट सिंहनी की ओर डरते–डरते बढ़े। वीर बालिका ने मरते दम तक अंग्रेजों से लोहा लेकर जाटों का उच्चतम शौर्य प्रदर्शन करने की परम्परा निभाई। अपनी कुर्बानी देकर समाज व देश को गौरवान्वित किया।

सिविल सेवा परीक्षा 2015 में पुराने रिकार्ड ध्वस्त कर 94 जाटों ने फिर पहराया परचम

यूँ जमी पर बैठकर क्यों आसपास देखते है पंखों को खोल, जमाना सिर्फ उड़ान देखता है, लहरों की तो फितरत ही है शोर मचाने की, मंजिल उसी की होती हैं जो नजरों से तुफान देखते हैं।

विशेष रिपोर्ट – जसबीर सिंह मलिक

सिविल सेवा परीक्षा 2015 के लिए कुल 9.4 लाख परीक्षार्थियों ने आवेदन किये थे जिसमें 4.6 लाख ने 18 से 23 दिसम्बर 2015 तक परीक्षा दी थी। इसमें 15008 पास हुये थे। इनमें से 2787 प्रतिभागी साक्षात्कार हेतु चुने गये जिनमे से अंतिम कुल 1078 को चुना गया है। इसमें सामान्य वर्ग से 499 ओबीसी के 314 एससी के 176 एसटी के 89 दिव्यांग के 20 सफल प्रतियोगी हैं। कुल 1078 में से आईएएस 180 आई एफ एस 45 आई पी एस 150 और केन्द्रीय सेवायों में ग्रुप ए 728 ग्रुप बी में 61 अधिकारियों की नियुक्ति होगी। ज्ञात रहे कि गत वर्ष 2015 में घोषित सिविल सेवा परिक्षा 2014 में कुल 12336 सफल प्रतियोगियों में 77 जाट प्रतियोगी सफल हुए थे। इस बार पिछला रिकॉर्ड प्रतिभावान जाटों ने तोड़ दिया है। इससे पूर्व वर्ष 2013 की परिक्षाओं में कुल 46 जाट सफल हुए थे यही नहीं जाटों ने अपनी रैंकिंग में भी जबर्दस्त प्रदर्शन करते हुए जसमीत सिंह संधू जाट के रूप में तीसरे पायदान पर अपनी जगह बनाई है जबकि 2014 के नतीजों में जाटों की सर्वोच्च वरीयता 60 रैंक की राहुल हुड्डा के रूप में थी जबकि इस बार प्रथम 60 टॉप में ही 9 जाट आ गये है। प्रथम 100 में से 15 जाट प्रतिभागी ही है जो अब तक सर्वोत्तम प्रदर्शन है। जाट समाज को होनहारो की इस बड़ी उपलब्धि की बहुत बहुत बधाई।

सफल 94 प्रतियोगियों की सूची वरीयता क्रम के हिसाब से इस प्रकार है :–

1. जसमीत सिंह संधू रैंक 3
2. आशीष सांगवान रैंक 12
3. शालिनी दुहन रैंक 21
4. दिव्यज्योति परीदा रैंक 26
5. नितिन सांगवान रैंक 28
6. इंदु रानी जाखड़ रैंक 30
7. अभिमन्यु गहलोत रैंक 38
8. तारूल रविश रैंक 49
9. आशीष दहिया रैंक 53
10. डॉ. मंजू जाखड़ स्योराण रैंक 59
11. अंकुर लाठर रैंक 77
12. सिमरनजीत सिंह काहलों रैंक 78
13. वैभव चौधरी रैंक 88
14. हरसिमरन सिंह बाजवा 90
15. गौरव सिंह सोगरवाल 99
16. हर्ष चिडानिया 100
17. अमरप्रीत कौर संधू 102

मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक सागर की तरह है। अगर कुछ बूंदे खराब हैं तो पूरे सागर को गंदा नहीं कहा जा सकता। –महात्मां गांधी

18. यशवीर सिंह खन्नी 121
19. प्रेमसुख डेलू बिश्नोई जाट 122
20. अमृता दुहन 134
21. रचित सिंहरावत 140
22. संदीप सिंह गिल 143
23. रिया तोमर 153
24. जगपाल सिंह धनोहा 184
25. सौजन्य सिंह बेनीवाल 212
26. अनुपम शयोरान गडवास 221
27. सोनिया नैन 244
28. ज्योतिन्द्र कौर बाजवा 256
29. देवीलाल 262
30. राकेश राठी 271
31. योगेश चौधरी 290
32. डॉ. मंजू चौधरी 291
33. राहुल कुमार 297
34. अंकुर रापडिया 298
35. प्रमोद कुमार श्योराण 309
36. पूनम बुरा 317
37. श्रुति चौधरी 322
38. हरदीप सिंह विर्क 331
39. शेलन्द्र सिंह इन्दोलिया 337
40. दीपिका सिंह 339
41. अद्यंश डबास 351
42. दानिस इंद्र सिंह गिल 359
43. जितेन्द्र डूडी 364
44. विवेक राठी 390
45 शिवी सांगवान 412
46. सचिन अहलावत 421
47. वैभव चौधरी 451
48. चन्दन दीप कौर 471
49. संदीप कुमार मलिक 479
50. आलेख दूहन 483
51. सिवि सिंह गहरवार 489
52. राहुल संधू चौधरी 509
53. नूर शेरगिल 510
54. शशि पाल डबास 514
55. रणजीत सिंह काजला 518
56. मयंक राणा 536
57. इंद्रजीत सिंह भट्टल 543
58. रचना छोकर 596
59. प्रीति गहलोत 598
60. अक्षया बुडानिया 604
61. अक्षया गोदारा 605
62. विकास जाखड़
63. नरेन्द्र बिजार्निया 631
64. गोपाल कृष्ण चौधरी 635
65. जसप्रीत सिंह ढिल्लो 638
66. रवि चौधरी 641
67. रोहतास सिंह तोमर 664
68. दीपक चौधरी 681
69. राजेश सिंह 689
70. मेवा राम ओला 716
71. ओमप्रकाश जाट 722
72. सैफाली बेरवाल 731
73. खेत राम चौधरी 739
74. सोनाक्षी सिंह तोमर 747
75. महेन्द्र सिंह गोदारा 741
76. जयप्रकाश भामू 755
77. सिमरत कौर रंधावा 757
78. कर्ण चौधरी 769
79. हीरा लाल 774
80. धन सिंह डागर 776
81. आदित्य तोमर 789
82. आनन्द पुनियां 791
83. आरती रावत पलवल 800
84. विजय सिंह 821
85. निशांत तोमर 824
86. विनोद कुमार चौधरी 848
87. मनीष कल्वानिया 855
88. निधि बराड 887
89. मनीष कुमार चौधरी 908
90. गीतू बड़ोलिया 918
91. बिजेन्दर सिंह सहारन 965
92. प्रदीप कुमार चौधरी 998
93. सुखदेव सिंह चहार 1017
94. सीमा चौधरी 1070

सामान्य और ओबीसी मिला कर कुल 94 जाट सिविल सेवा परीक्षा में उतीर्ण हुए। यदि केन्द्र में ओबीसी आरक्षण न टूटता तो यह संख्या बढ़ जाती। यह तो हमारे होनहारों की कठोर मेहनत का परिणाम है जिसकी हर जाट प्रतियोगी को रीस करनी चाहियें। जय जाट सन्दर्भ श्रोत माध्यम – हरियाणा पंजाब राजस्थान यूपी सहित सोशल मीडिया पर विभिन्न जाट संगठनों सहित जाट रत्न मीडिया नेटवर्क। जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकूला की ओर से सभी होनहार विजेताओं को हार्दिक शुभकामनाएं।

– 'जाट महान'

राजा महेंद्र प्रताप के आदर्शों से प्रेरणा लें

आर्यन पेशवा त्यागमूर्ति राजर्षि राजा महेंद्र प्रताप एक महान यशस्वी क्रांतिकारी देशभक्त, विचारक, भारत में औद्योगिक शिक्षा के जन्मदाता, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के ऐतिहासिक महापुरूष थे। उन्होंने हिंदुस्तान को आजादी दिलाने में अपने जीवन की बाजी लगाते हुए विश्व को प्रेमधर्म, संसार–संघ एवं नवीन विचार विज्ञान जैसे उत्कृष्ट आयाम–विचार प्रदान किए। उनकी देशभक्ति और त्याग के सामने अनेक लोगों का व्यक्ति फीका पड़ जाता है, लेकिन हमारी राजनीति की यह विडंबना है कि ऐसे सच्चे सपूत और स्वाधीनता के भीष्म पितामह को भुला दिया गया। समाज, शासन और इतिहासकारों ने भी उनके साथ न्याय नहीं किया। अब उनके ऐतिहासिक मूल्यांकन की परम आवश्यकता है।

उक्त विचार वरिष्ठ शिक्षाविद एवं राजा महेंद्र प्रताप मिशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने राजा साहब के जन्म दिवस समारोह एवं राष्ट्रीय विचार–संगोष्ठी में व्यक्त किए। प्रोफेसर सोलंकी ने कहा कि राजा महेंद्र प्रताप महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के समर्थक थे, लेकिन गांधीवाद को अधूरा दर्शन मानते थे। वे समाजवादी थे परंतु भक्ति को एकांगी मानते थे व विद्रोही और क्रांतिकारी होते हुए भी विश्व शांति, प्रेम व समता व मानवता के उपासक थे। डा. दुर्गपाल सोलंकी ने कहा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश ने विकास की दृष्टि से निश्चय ही तरक्की की हैं लेकिन चारित्रिक और नैतिक मूल्यों में जो गिरावट आई है। वह वास्तव में दुःखदाई है। प्रो. सोलंकी ने युवाओं और मिशन के कार्यकर्ताओं का आहवान किया कि वे महान युग दृष्टा राजा महेन्द्र प्रताप के जीवन आदर्शों, व्यक्तिगत एवं कृतित्व से प्रेरणा लेकर चरित्रवान बनें। देश की भलाई के लिए सदैव तत्पर रहे और व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर नवीन समाज और रचनात्मक रूप से राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर सक्रियता से जुट जायें।

समाजवादी विचार एवं राजनीति नेता डा. दौलतराम चतुर्वेदी ने कहा कि राजा महेन्द्र प्रताप ने एक दिसम्बर सन् 1915 को काबुल–अफगानिस्तान में भारत की प्रथम अस्थायी स्वतन्त्र राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की और इन्डियन नेशनल फोर्स का गठन किया। राजा साहब इस सरकार के राष्ट्रपति और मौलाना वरकतुल्लातखान प्रधानमंत्री बने थे जिसे बिट्रेन विरोधी राष्ट्रों ने मानरूता दी थी। किशोरीरमण पी जी कॉलेज, मथुरा के राजनीति विज्ञान विभाग के उपाध्यक्ष प्रोफेसर सुधीर प्रताप सोलंकी ने कहा कि राजा महेन्द्रप्रताप पहले भारतीय थे जिन्होंने औद्योगिक शिक्षा के लिए एन 1909 में वृन्दावन में प्रेम महाविद्यालय की स्थापना की जो राष्ट्रीय आंदोलनों के दिनों में स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों का प्रशिक्षण केन्द्र व शरण स्थली था।

समारोह की मुख्य अतिथि एवं कमला राजा शासकीय स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर की वरिष्ठ प्रोफेसर डा. सुधा सिंह ने कहा कि राजा महेन्द्र प्रताप सामन्ती संस्कृति के उन शीर्षस्थ एवं मूर्घन्य ऐतिहासिक महानुभावों में थे जिन्होंने केवल भारत की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया अपितु उनकी विचारधारा भविष्य के भारत के निर्माण हेतु एक उपयोगी प्रारूप देने में सक्षम और समर्थ रही। विद्यार्थी कल्याण सभा के अध्यक्ष कुंवर अजीत कुमार अत्री ने कहा कि राजा महेन्द्र प्रताप महान लेखक, उत्कृष्ठ, विद्वान और कुशल सम्पादक थे। उन्होंने सन् 1929 बलिन–जर्मनी से वर्ल्ड फैडरेशन नामक समाचार–पत्र प्रकाशित किया जो आगे चलकर अमेरिका, देहरादून, दिल्ली और वृन्दावन से प्रकाशित हुआ। स्वतन्त्रता–सेनानी डा. तेजसिंह वर्मा ने अपने सम्बोधन में राजा महेन्द्र प्रताप को भारत रत्न की उपाधि से विभूषित करने, संसद भवन में तेल–चित्र प्रेम धर्म पुस्तक को पाठयक्रमों में लगाने तथा प्रेस विश्वविद्यालय की स्थापना पर बल दिया। शासकीय महाविद्यालय, भोपाल के वाणिज्य विभाग के प्रो. राकेश राणा ने कहा कि आज विश्व को राजा साहब की विश्वशान्ति, एकता एवं सर्वधर्म सद्भाव के दर्शन की आवश्यकता महसूस होने लगी हैं आसामराइफल पब्लिक स्कूल, शिलांग–मेघालय के प्राचार्य पी के राजौरा ने कहा कि राजा महेन्द्र प्रताप युग पुरूष एवं जननायक थे। उन्होंने तत्कालीन हिन्दुस्तान की समस्याओं को दूर से ही नहीं देखा वरन उन्हें टटोला, कुरेदा और उनको आत्कसात कर समाधान का प्रयास किया।

–जाट रत्न से साभार

राष्ट्र गौरव, वीर शिरोमणि महाराजा सूरजमल भारतीय इतिहास की महान धरोहर

–प्रो. दुर्गपाल सिंह सोलंकी

आज समाज भटक रहा है। उसकी प्रेरणा के स्त्रोत सूख गए हैं। उसे न कोई अपना शुभचिंतक दिखाई देता है न मार्ग दर्शक। वह दिग्भ्रांत हैं, किंकर्त्तव्य विमूढ़ हैं। सच बात तो यह है कि वह वस्तुत अनाथ है। चरित्र और राष्ट्र निर्माण की ओर समाज के कर्णधारों का ध्यान नहीं है और चरित्र और नैतिक शिक्षा के बिना न देश उठ सकेगा और न समाज उन्नति कर सकेगा। ऐसी विषय स्थितियों में युवाओं का दायित्व है कि वे महाराजा सूरजमल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लेकर नये समाज का निर्माण करें।

उक्त विचार शिक्षाविद् एवं राजा महेंद्र प्रताप मिशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने भरतपुर–लोहागढ़ के संस्थापक महाराजा सूरजमल के बलिदान–दिवस पर सम्पन्न विचार–संगोष्ठी में व्यक्त किए।

डा. दुर्गपाल सोलंकी ने कहा कि महाराजा सूरजमल की हिंदुस्तान के इतिहास में एक महान व महत्वपूर्ण भूमिका है जिसको मुगल दरबार के इतिहासकारों ने नकारा है। अंग्रेज लेखकों ने कम करके आंका है। भारतीय लेखकों ने भी उनको सूरजमल जाट या

अपने अंदर ईश्वर की उपस्थिति का चैतन्य ज्ञान ही विश्वास है। –महात्मां गांधी

जाटों का प्लेटो अथवा पेशवा कहकर उनके ऐतिहासिक महत्व को कम किया है। प्रो. सोलंकी ने कहा कि हिंदु–मुस्लिम वैमनस्य, किसानों की फसल की बरवादी धरों में स्त्रियों की इज्जत की रक्षा, देहातों में चल व अचल संपत्ति को बनाये रखने की चिंता, आए दिन लगान वसूली में पशुओं को छीन ले जाने का भय तकियों पर बैठे मुल्ला व मौलवियों के कुचक्र, सामंतों की विलासता, भारतीय राजाओं को नवाबों की आपसी लड़ाई व बाहरी आक्रमणों को रोकने की कमजोरी, मराठा शक्ति का हिंदु पात शाही का स्वप्न और अन्नतः देश को एक बड़ी ताकत– अहमदशाह अब्दाली द्वारा गुलाम बनाने की कोशिश से बचाना आदि कई समस्याएं उनके सामने थीं। महाराजा सूरजमल ने बड़े कौशल तथा दूरदर्शिता आदि कई समस्याओं उनके सामना व समाधान किया।

प्रोफेसर दुर्गपाल सोलंकी ने आवाहान करते हुए कहा कि महाराजा सूरजमल की जीवन–पद्धति के अनुसरण से सफलता की चरम सीमा पर पहुंचने का अच्छा अवसर मिलता है। यही वह मार्ग है जिस पर चलकर युवा अपना जीवन बना सकते हैं। युवाओं को चाहिए कि वे सम्राट और राष्ट्र हित में किए गये उनकी कार्य–प्रणाली को समझें। समाज और राष्ट्र हित में किए गये उनके कार्यों को अपनाएं और अध्ययन, मनन, चिंतन व घोर परिश्रम को जीवन–उदेश्य बनाकर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

किशोरीरमण पी.जी. कालेज, मथुरा के राजनीति विज्ञान के अध्यापक प्रोफेसर सुधीर प्रताप सोलंकी ने कहा कि महाराजा सूरजमल को हम एक ऐसे धुरंधर व्यक्ति के रूप में पाते हैं। जिसने हिंदुस्तान की बिखरी शक्तियों को संगठित करने का प्रयत्न किया। उनकी सबसे बड़ी देन है। परतंत्रता तथा शोषण की चक्की में पिसती जनता को स्वतंत्रता और स्वाभिमान के साथ जीने का पाठ पढ़ाया। अध्यक्षीय संबोधन में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तेजसिंह वर्मा ने कहा यथार्थ में उस काल की एकमात्र ऐतिहासिक आवश्यकता जनता में अमन चैन, राजनैतिक स्थिरता, मिली–जुली संस्कृति की रक्षा, विदेशी आक्रांताओं और मंचूरी फिरका परस्त ताकतों से निपटना था। इन महान उदेश्यों के लिए प्रयत्न करने वाले एक मात्र योद्धा सम्राट सूरजमल थे।

जय देवी

(जिस जाट बेटी ने अपनी बहन व 12 गांव वासी भाईयों की हत्या का बदला लेने के लिए लखनऊ जाकर अंग्रेज अधिकारी के घर भेष बदल कर नौकरी की व अंग्रेज को मारकर बदला लिया था।)

सन् 1857 की क्रांति के समय जाट युवतियों ने अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया था। अग्रेजों ने अनेक जाट स्त्री, बच्चे और पुरूषों की नृशंस हत्याएं की। शिवदेवी की 14 वर्षीय छोटी बहन जयदेवी ने यह दृश्य अपने तिमजिले मकान से देखा।

उसने बड़ौत वासियों को कहा कि मेरी बहन के प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि यही है कि हम आजादी के लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी देते रहें। जयदेवी ने प्रण किया था कि जिस अंग्रेज ने उसकी बहन तथा वीरों पर गोलियां चलाने का आदेश दिया था, उसका बदला अवश्य लूंगी। उसने गंगोल गांव के 22 क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी बंदूकों द्वारा छलनी किये हुये शरीरों को तथा घोलाना के 14 वीरों के पेड़ों पर लटकाएं हुये शवों को भी देखा था, लेकिन फिर भी वह डरी नहीं। वीर बालिका जयदेवी अंग्रेजों के रिसाले का पीछा करती रहती तथा गांवों में घूमकर युवक–युवतियों में जोश पैदा करती। जयदेवी के साथ लगभग 200 क्रांतिकारियों का जत्था चलता था तथा उसने अंग्रेज रिसाले का लखनऊ तक पीछा किया लेकिन अंग्रेजों को, जयदेवी की खबर तक नहीं लगी। इस वीर बालिका ने मेरठ, बुलन्दशहर, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी, इटावा आदि जिलों में भी क्रांति की अलख जगाई। लखनऊ में जयदेवी ने अपने क्रांतिकारी दस्ते द्वारा बड़ौत में अत्याचार करने वाले अंग्रेज अधिकारी के बंगले की खोज करवा ली।

कई दिनों तक अंग्रेज अधिकारी को मारने का प्रयास होता रहा। लखनऊ में उन्हें छिपकर रहने और खाने की भी परेशानी हुई। लेकिन एक दिन बंगले में टहलते हुए अंग्रेज अफसर का सिर जयदेवी ने तलवार से उड़ा दिया। उसके अनुयायियों ने अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया और बंगले को आग लगा दी। क्रांतिकारी अंग्रेजों ने झुंझकर खुखांर हो गये। कपड़ों पर लगे खून से अंग्रेज जयदेवी को पहचान गये और उनकी देह को लखनऊ में पेड़ से लटका दिया गया।

अंग्रेजों के भंयकर आतंक के बावजूद क्रांतिकारियों ने उनकी लाश को दफना कर उस पर चबूतरा बनवा दिया। (यह चबुतरा विधानसभा की दूरदर्शन वाली सड़क पर है)। यहां देशभक्त लोग आज भी सिर झुकाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। बूढ़े लोग आज भी जयदेवी की लोककथा सुनाकर बालिकाओं में वीरता का संचार करते हैं।

दीनबन्धु, किसान मसीहा, रहबरे आजम सर छोटूराम

महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, किसान–कामगारों के सर्वोच्च मसीहा, रहबरे आजम दीनबन्धु चौधरी सर छोटूराम जी ईमानदार तपे तपाये राजनेता, जबरदस्त संगठनकर्ता, किसानों में राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने वाले अग्रणी विचारक, साम्प्रदायिक एकता स्थापित करने वाले अप्रतिम राजनीतिज्ञ और समन्व मूलक सांस्कृतिक धरोहर अप्रतिम राजनीतिज्ञ और समन्वय मूलक सांस्कृतिक धरोहर को आगे बढ़ाने वाले कुशल सामाजिक एवं उत्कृष्ठ देशभक्त थे उन्होंने भोले–भाले किसानों को बोलना सिखाया। अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने की प्ररणा दी। मिस्टर जिन्ना की साम्प्रदायिक सोच तथा कांग्रेस की साहूकार एवं हिन्दु लाबी को विफल करके हिन्दु मुसलिम सिंख एकता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

उक्त विचार प्रख्यात शिक्षाविद् व राजा महेन्द्र प्रताप सर छोटूराम व चौधरी चरण सिंह किसान क्रान्ति कामगार मिशन शोध संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोंलकी ने किसान मसीहा एवं पंजाब के तत्कालीन वित्त मंत्री रहे चौधरी छोटूराम की जयन्ती पर सम्पन्न समारोह एवं राष्ट्रीय विचार संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किए। 32 वर्ष तक महाविद्यालय के प्राचार्य रहे डा. दुर्गपाल सोलंकी ने कहा कि चौधरी छोटूराम युग पुरूष थे। उनका पूरा जीवन जनसेवा का अनुरूप उदाहरण है बहुमुखी प्रतिभा के धनी सर छोटूराम विचारशील, विवेकी एवं सिद्धान्तवादी विद्धान महानुभाव थै। उन्होंने गरीबों, दलितों, अल्पसंख्यकों, शोषित एंव उपेक्षित लोगों के लिए जीवन पर्यन्त लड़ाई लड़ी। इन तबकों के सच्चे हमदर्द होने के कारण व दीनबन्धु की उपाधि से विभूषित हुए। प्रोफेसर साहब ने कहा कि छोटूराम जी सभी वर्गों के हितैषी थे और उन्हें किसी जाति विशेष या वर्ग से बांधना उनके प्रति अन्याय होगा। उन्होंने केवल किसानों और मजदूरों के लिए ही नहीं अपितु दुकानदारों और व्यापारियों के हितों के लिए बड़े काम किए। डा. दुर्गपाल सोलंकी ने कहा कि वास्तव में गरीबों के हितों की रक्षा के लिए तत्कालीन युग में सर छोटूराम जैसा प्रतिबद्ध नेता दुसरा कोई नही दिखता यही कारण है कि हिन्दु और मुसलमान किसानों ने मिलकर उनको रहबर–ए–आजम की उपाधि से नवाजा। उनके घोर आलोचक भी एक स्वर से स्वीकारते हैं कि काश, छोटूराम कुछ दिन और जीवित रहते तो देश की अखण्डता बची रहती और पाकिस्तान नहीं बनता। प्रोफेसर दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने कहा कि आज छोटूराम हमारे बीच नहीं है लेकिन हमारे पास अनेक विचार, नीतियां व कार्यक्रम हैं यदि सही मायने में देश का विकास करना है तो हमें दीनबन्धु के बताये रास्ते पर चलना होगा। तभी हम एक नया हिन्दुस्तान बनाने में कामयाब हो सकेंगे। डा. सोलंकी ने मिशन एवं शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं शोधार्थियों तथा उपस्थित जन समुदाय का आहान करते हुए कहा कि वे सर छोटूराम के दिखाये रास्ते पर चलते हुए रचनात्मक कार्यों में सक्रियता से जुटने का संकल्प लेकर राष्ट्र निर्माण के उनके सपनों के साकार करें, क्योंकि उनके विचार, नीतियों व कार्यक्रम आज भी प्रांसगिक एवं सार्थक है।

इतिहासविद् प्रो. अरूण प्रताप सिंह चनन ने कहा कि चौ. छोटूराम दो दशकों से अधिक हिन्दुस्तान विशेषकर पंजाब की राजनीति में छाये रहे। हमारे देश के इतिहास में छोटूराम जी का नाम हमेशा किसान जागृति से जुड़ा रहेगा। उन्होंन किसानों को आत्म सम्मान के साथ जीने के लिए प्रेरित किया। किसान हितों के विधेयक पास करवा कर कानून बनाये। उन्हें कर्जों से मुक्ति दिलवाई। गिरवी रखी हुई जमीन किसानों को वापिस दिलवाई। किशोरीरमण पोस्ट–ग्रेजुएट कालेज मथुरा के राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर डा. सुधी पताप सोलंकी ने कहा कि छोटूराम जी ने राजनीतिक स्वतन्त्रता से पहले आर्थिक आजादी को महत्व दिया। महात्मां गांधी हिन्दु स्वराज्य का तात्पर्य ग्राम राज्य या किसान राज्य समझते थे जब कि छोटूराम किसान की आर्थिक आजादी को प्रमुख मानते थे। वे इसी मुद्दे पर कांग्रेस पार्टी से अलग होकर यूनीयनिस्ट पार्टी की स्थापना कर पंजाब में सरकार का संचालन किया।

अध्यक्षीय सम्बोधन में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी चौधरी तेजसिंह वर्मा ने कहा कि सर छोटूराम पिछड़ेपन का मुख्य कारण शिक्षा की कमी को मानते थे। उनकी कामना थी कि शिक्षा का प्रकाश दूर दराज के गांवों तक फैले। इन्होंने किसानों और गरीबों की आवाज बुलन्द करने के लिए जाट गजट नामक अखबार का प्रकाशन किया। उन्होंने भ्रष्टाचार पर करारी चोट की। तेज वर्मा ने दीनबन्धु के आदर्श विचारों से प्रेरणा लेने की अपील की। परिवहन अधीक्षक कुवर अजीत सोलंकी ने छोटूराम ने व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुये उनको भारत रत्न की उपाधि से अलंकृत किए जाने की मांग की।

– जाट रत्न से साभार

जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार अखिल भारतीय आन दी स्पाट निबंध लेखन प्रतियोगिता

जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा मोती राम आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सैक्टर 27 चंडीगढ़ के इलावा हरियाणा राज्य के विभिन्न परीक्षा केंद्रों-चौ0 भरत सिंह यादगार खेल स्कुल, निडानी जिला जींद, भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार कन्या वरिष्ठ माध्यमिक स्कुल निडानी, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जुलाना जिला जींद, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शामलो कलां जिला जींद, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जुलाना जिला जींद, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय किला जफ्रगढ़ जिला जींद, ज्ञानदीप माडल स्कुल सैक्टर 18 पंचकुला, सी एल डी ए वी पब्लिक स्कूल सैक्टर 11 पंचकुला पर आयोजित की गई भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार अखिल भारतीय आन दी स्पाट निबंध लेखन प्रतियोगिता में हरियाणा व चंडीगढ़, मोहाली के विभिन्न कालेजों व स्कूलों के लगभग 1500 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

जाट सभा द्वारा यह प्रतियोगिता हर वर्ष सभा के प्रधान डा0 एम0एस0मलिक आईपीएस (सेवा निवृत) के दिवंगत बहु प्रतिभाशाली पुत्र की यादगार में आयोजित की जाती है जो कि स्कूलों व कालेजों के विद्यार्थियों में शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियों के विस्तार के प्रति रूची उत्पन्न करने के इलावा उनको अपनी प्रतिभा तथा विवेक द्वारा लेखन कला व शैक्षणिक दक्षता का प्रदर्शन करने का अवसर भी प्रदान करती है।

सारिका मलिक, ड्रग ऑफिसर पंचकूला द्वारा मोती राम आर्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर 27-ए, चंडीगढ़ केंद्र पर निबंध के ऑन दी स्पॉट विषय - 'प्राकृतिक, आपदाएं, समस्याएं एवं समाधान या पानी की कमी कारण एवं समाधान' की आलोचना करते हुए प्रतियोगिता का शुभारंभ किया।

हमें जिन पर गर्व है

We are proud of Mr. Pulkit, son of Shri Satyapal Malik, Deputy Chief Engineer, HMT Pinjore on his excellent performance in 10+2 CBSC Board Examination (Non-Med.) He secured 94% marks. He will how pursue his B.Tech from PEC University of Technology Chandigarh. He also secured AIR 9569 in IIT JEE advance too.

We are proud of Mr. Sumit Sangwan has been selected for NDA, 2015-136th Batch by securing 859 marks. He has been placed at 40th position of recommended candidates in order of sangwan who hails from V.P.O. Mehra Teh. Charkhi-Dadri, Distt. Bhiwani is working as Asstt. Engineer in HMT, Pinjore.

Jat Sabha, Chandigarh/Panchkula congratulates him and his family on his excellent achievement and wish his or successful career in armed forces of India.

श्री रणधीर सिंह जागलान के सुपुत्र राहुल सिंह जागलान ने 10वीं की परीक्षा CBSC द्वारा आयोजित सेंट जोन्स स्कूल, चंडीगढ़ से 10 सीजीपीए हासिल कर अपने स्कूल और माता–पिता का नाम रोशन किया है। उसने इसका श्रेय स्कूल के शिक्षकों व अभिभावकों को दिया है। मकान नं. 898, सेक्टर–16, पंचकूला के निवासी, राहुल के पिता हरकोंबैंक में सीनियर अकाउंटेंट व माता अनीता सिंह जागलान गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल सैक्टर–6 में लेक्चरार है।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।